BCM SCHOOL, CHANDIGARH ROAD, LUDHIANA

A Senior Secondary school of BCM Foundation
Affiliated to CBSE, New Delhi
Sec-32A, Chandigarh road, Ludhiana

www.bcmschools.org *Rotate in values, Ready for the future* 18 April 2026

Campus Connect

Theme : Consumerism

In today's morning assembly, the students of Class +2 Humanities A conducted an engaging and thought-provoking presentation on the theme "Consumerism." The assembly aimed to create awareness about the growing culture of excessive consumption and its impact on individuals as well as society.

The assembly began with a warm welcome to the respected parents, teachers, and fellow students. The anchors introduced the topic of consumerism, highlighting how modern lifestyles often encourage unnecessary spending and materialistic thinking.

To present the theme effectively, the students performed a role play that depicted real-life situations, showing how people are influenced by advertisements and peer pressure to buy more than they actually need. The performance conveyed a strong message about mindful consumption and the importance of making responsible choices.

In addition to this, a music performance and a dance performance were also presented, adding energy and enthusiasm to the assembly. These performances entertained the audience and made the overall presentation more lively and engaging.

Each segment of the assembly was thoughtfully planned and executed, ensuring that the message was both informative and impactful. The presentation encouraged students to adopt a more conscious and balanced approach towards their lifestyle and consumption habits.

The assembly concluded with a meaningful message, urging everyone to differentiate between needs and wants and to make wise, sustainable decisions in their daily lives.

All the students of Class +2 Humanities A contributed wholeheartedly to make the assembly a memorable and insightful experience

Campus Connect

BCM SCHOOL CHANDIGARH ROAD FOUNDATIONAL STAGE CONDUCTS SCIENCE ACTIVITIES

Hands on Activity

BCM School Chandigarh Road Foundational Stage conducted simple and engaging science activities for young learners. Nursery students explored the concept of float and sink by observing different objects in water, which helped them develop observation and prediction skills. LKG students performed a surface tension activity using water, a cotton bud, and perfume, where they observed bubble formation and understood that adding substances can change the behavior of water. UKG students conducted a molecular motion activity using hot and cold water with Fevicol and learned that temperature affects the movement and behavior of substances. The activities enhanced curiosity and basic scientific understanding among students.

"THE GREATEST THREAT TO OUR PLANET IS THE BELIEF THAT SOMEONE ELSE WILL SAVE IT."

Campus Connect

बच्चों में हीन भावना एवं मानसिक तनाव

आज के बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं, और इस भविष्य के निर्माण की जिम्मेदारी माता-पिता तथा अध्यापकों के हाथों में है। यदि बचपन में ही ये नन्हे बालक हीन भावना से ग्रस्त हों तथा मानसिक तनाव से पीड़ित रहें, तो भविष्य कितना भयावह हो सकता है, इसका अनुमान लगाना कठिन है। आवश्यक है कि हम विचार करें कि बचपन के ये नन्हे फूल आखिर क्यों मुरझा जाते हैं।

सबसे पहला कारण है माता-पिता की तुलनात्मक प्रवृत्ति। अपने बच्चों की तुलना निरंतर दूसरे बच्चों से करना, कक्षा में अंकों को लेकर दबाव बनाना, छोटी-छोटी बातों पर रोक-टोक करना, बार-बार गुस्सा करना या शारीरिक दंड देना—ये सभी बातें बच्चे के मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। इससे उसका व्यक्तित्व भयभीत और संकोची बन जाता है तथा वह स्वयं को उपेक्षित महसूस करने लगता है।

आज के समय में अनेक माता-पिता नौकरी करते हैं और बच्चों को दिनभर घरेलू सहायकों के भरोसे छोड़ देते हैं। केवल बच्चों की शिक्षा और भरण-पोषण ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी भावनाओं को समझना, उनसे संवाद करना और उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं का सम्मान करना भी उतना ही आवश्यक है। बच्चों के साथ प्रतिदिन खुलकर बातचीत करना जरूरी है, ताकि वे अपनी भावनाएँ, डर और परेशानियाँ सहजता से साझा कर सकें।

डिजिटल युग में मोबाइल, सोशल मीडिया और ऑनलाइन माध्यमों का बढ़ता प्रभाव भी बच्चों के मानसिक तनाव का एक बड़ा कारण बन गया है। अत्यधिक स्क्रीन टाइम, आभासी दुनिया में तुलना और अकेलापन बच्चों के आत्मविश्वास को कमज़ोर बना सकते हैं। अतः माता-पिता को बच्चों के डिजिटल उपयोग पर संतुलित निगरानी रखनी चाहिए। आजकल माता-पिता भी बच्चों के साथ समय व्यतीत करने की विजय मोबाइल फोंस सोशल मीडिया पर ज्यादा समय बताना पसंद करते हैं जो घर का वातावरण है बच्चा आपकी सुनने की और कहना मानने की बजाय जो घर का माहौल देखेगा वैसा ही बनेगा तो उनके लिए आपका रोल मॉडल बनना बहुत जरूरी है

पढ़ाई के अतिरिक्त बच्चों में जो विशेष योग्यताएँ और गुण होते हैं, उन्हें पहचानना और प्रोत्साहित करना भी आवश्यक है। यदि किसी बच्चे की रुचि चित्रकारी, संगीत, खेलकूद या साहित्य में है, तो उसे समय की बर्बादी न समझें। संभव है वही बच्चा भविष्य में किसी क्षेत्र का सितारा बने।

विद्यालय भी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्यापकों को चाहिए कि वे बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन को समझें, उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करें और सकारात्मक वातावरण प्रदान करें। प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन बच्चों के आत्मबल को मजबूत बनाता है।

बच्चों के समस्याओं को तर्क पूर्ण तरीके से सुलझाने की कोशिश करें ना के किसी तरह से डांट फटकार कर।

हमें बच्चों को यह भी सिखाना चाहिए कि असफलता जीवन का अंत नहीं, बल्कि सीखने का अवसर है। जब वे हार को स्वीकार करना सीखते हैं, तब उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और हीन भावना कम होती है। योग, ध्यान, खेल, संगीत, चित्रकला और कहानी-पठन जैसी गतिविधियाँ मानसिक तनाव को कम करने में अत्यंत सहायक हैं।

जब बच्चा किशोरावस्था में प्रवेश करता है, तब उसे माता-पिता के रूप में एक ऐसे मित्र की आवश्यकता होती है, जो उसकी भावनाओं को समझे, उसका मार्गदर्शन करे और जीवन की राह में सही दिशा दिखाए।

भारतीय संस्कृति में माता-पिता को ईश्वर का दर्जा इसलिए दिया गया है क्योंकि वे केवल जन्मदाता ही नहीं, बल्कि जीवन निर्माता भी हैं। आइए, हम अपने परिवार की इन छोटी-छोटी कलियों को प्रेम, विश्वास, प्रोत्साहन और स्नेह से सींचें, उन्हें संवारें, ताकि वे विकसित होकर अपनी सुगंध पूरे विश्व में फैला सकें।

बिंदु सूद
एक्टिविटी इंचार्ज

Editor & Coordinator : Ms.Heena Patel